International Journal of Scientific Modern Research and Technology
(Volume: 24, Issue: 02, Number: 04) Paper ID: IJSMRT - 26080204
ISSN: 2582-8150

शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूपता का अध्ययन भोपाल जिले के विशेष संदर्भ में

Anju Shrivastava
Education Department,
I.E.S. University, Bhopal, India

Dr Neera Singh
Education Department,
I.E.S. University, Bhopal, India

Palak Shrivastava
Economics Department,
I.E.S. University, Bhopal, India

सारांश: प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान समय में तीव्र सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तन व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा की भूमिका केवल ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने तक सीमित नहीं रह सकती, बल्कि विद्यार्थियों में ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता तथा विनम्रता जैसे मूल्यों के विकास पर भी बल देना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। भोपाल जिले के 5 शासकीय तथा 5 अशासकीय महाविद्यालयों से कुल 1000 विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। मानवीय मूल्यों के आकलन के लिए 60 प्रश्नों वाली प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा क्रांतिक अनुपात (C.R.) के आधार पर किया गया। अध्ययन में ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता एवं विनम्रता को प्रमुख मानवीय मूल्य माना गया। प्रमुख परिणामों से संकेत मिलता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के बीच अध्ययन किए गए अधिकांश मूल्यों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं के अनेक तुलनात्मक परीक्षणों में भी सार्थक अंतर नहीं मिला। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवीय मूल्यों का विकास केवल संस्थान के प्रकार या लिंग से निर्धारित नहीं होता, बल्कि परिवार, शिक्षण वातावरण, सामाजिक अनुभव और मूल्यपरक शैक्षिक गतिविधियों की संयुक्त भूमिका महत्वपूर्ण है।

प्रमुख शब्द: मानवीय मूल्य, मूल्य शिक्षा, ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता, विनम्रता, शासकीय महाविद्यालय, अशासकीय महाविद्यालय, भोपाल जिला।

How to cite this article: Anju Shrivastava, Dr Neera Singh, Palak Shrivastava. (2026). शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूपता का अध्ययन भोपाल जिले के विशेष संदर्भ में, International Journal of Scientific Modern Research and Technology (IJSMRT), ISSN: 2582-8150, Volume-24, Issue-02, Number-04, Aug- 2026, pp. 39-44, URL: https://www.ijsmrt.com/wp-content/uploads/2026/10/IJSMRT-26080204.pdf

Copyright © 2026 by author (s) and International Journal of Scientific Modern Research and Technology Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0)

(http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

IJSMRT-26080204

1. भूमिका

मानवीय मूल्य किसी भी सभ्य समाज और राष्ट्र की आधारशिला होते हैं। शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक विकास के साथ उसके नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानवीय पक्षों को विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि शिक्षा केवल परीक्षा, अंक और रोजगार प्राप्ति

तक सीमित हो जाए तो व्यक्तित्व विकास का मूल्यपरक पक्ष उपेक्षित रह सकता है। इसलिए शिक्षा का व्यापक उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ सत्यनिष्ठ, संवेदनशील, उत्तरदायी और सामाजिक रूप से जागरूक हों।

महाविद्यालयीन अवस्था विद्यार्थी जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। इस अवधि में विद्यार्थी अपने भविष्य के व्यावसायिक जीवन की तैयारी करने के साथ-साथ जीवन-दृष्टि और सामाजिक व्यवहार को भी विकसित करता है। इसी समय में उसके निर्णय, संबंध, उत्तरदायित्व-बोध तथा नैतिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत स्थायी रूप ग्रहण कर सकते हैं। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में मानवीय मूल्यों के विकास का विशेष महत्व है।

आधुनिक तकनीकी प्रगति ने संचार और ज्ञान के अवसरों को व्यापक बनाया है, किंतु प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, भौतिकवादी दृष्टिकोण और व्यक्तिगत सफलता पर अत्यधिक बल जैसी प्रवृत्तियाँ मूल्य-चेतना के लिए चुनौती भी उत्पन्न करती हैं। ऐसे परिवेश में ईमानदारी व्यक्ति को सत्यनिष्ठ आचरण के लिए, सच्चाई व्यवहार में पारदर्शिता के लिए, मानवीयता दूसरों के प्रति संवेदनशीलता के लिए और विनम्रता सामाजिक संबंधों में संतुलन के लिए प्रेरित करती है।

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के संसाधन, प्रशासनिक संरचना, कार्य-संस्कृति तथा शैक्षिक वातावरण में कुछ संभावित भिन्नताएँ हो सकती हैं। इसलिए यह जानना उपयोगी है कि इन संस्थागत परिस्थितियों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है अथवा नहीं। प्रस्तुत अध्ययन इसी प्रश्न का अनुभवजन्य परीक्षण करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था में इसलिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि महाविद्यालयीन विद्यार्थी भविष्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व एवं उत्तरदायित्व की भूमिकाएँ निभाते हैं। यदि उनमें सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, सामाजिक उत्तरदायित्व और विनम्रता जैसे गुण विकसित होते हैं तो वे अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ समाज के विकास में भी सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से शैक्षिक नीति-निर्माताओं, महाविद्यालयीन शिक्षकों तथा अभिभावकों को विद्यार्थियों में मूल्य-जागरूकता की स्थिति समझने में सहायता मिल सकती है। साथ ही, यह अध्ययन मूल्यपरक सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों और उच्च शिक्षा में मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिए आधार प्रदान करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में ईमानदारी के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में सच्चाई के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में मानवीयता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में विनम्रता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मानवीय मूल्यों में अंतर का अध्ययन करना।
- अशासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मानवीय मूल्यों में अंतर का अध्ययन करना।

- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के छात्रों तथा छात्राओं के मानवीय मूल्यों की तुलनात्मक समीक्षा करना।

4. परिकल्पना

H_0: शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की ईमानदारी में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

H_0: शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सच्चाई में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

H_0: शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की मानवीयता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

H_0: शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

H_0: अशासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता तथा विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

H_0: शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता तथा विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

5. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का केंद्र भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता था।

न्यादर्श: अध्ययन में भोपाल जिले के 5 शासकीय एवं 5 अशासकीय महाविद्यालयों से कुल 1000 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

शोध उपकरण: विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के आकलन हेतु 60 प्रश्नों वाली प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में ईमानदारी, सच्चाई, विनम्रता तथा मानवीयता से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे।

सांख्यिकीय तकनीक: आंकड़ों के विश्लेषण में मध्यमान (Mean), मानक विचलन (S.D.), मानक त्रुटि (S.E.) तथा क्रांतिक अनुपात (C.R.) का उपयोग किया गया। प्राप्त C.R. की तुलना संबंधित सारणी-मूल्यों से करके शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का परीक्षण किया गया।

6. परिणाम एवं विश्लेषण

शोध-प्रबंध में प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर प्रमुख तुलनात्मक परिणाम निम्नानुसार हैं।

तालिका 1: शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की ईमानदारी की तुलना

समूह	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	C.R.	निष्कर्ष
अशासकीय महाविद्यालय	31.30	7.60	1.33	सार्थक अंतर नहीं
शासकीय महाविद्यालय	31.90	6.60	1.33	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या: अशासकीय एवं शासकीय विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 31.30 एवं 31.90 प्राप्त हुए। C.R. = 1.33, 0.05 स्तर के 1.98 तथा 0.01 स्तर के 2.63 से कम है। अतः ईमानदारी में दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 2: शासकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की सच्चाई की तुलना

समूह	मध्यमान (M)	C.R.	निष्कर्ष
छात्र	33.87	0.553	सार्थक अंतर नहीं
छात्राएँ	33.62	0.553	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या: दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर बहुत कम है तथा C.R. = 0.553 निर्धारित सारणी-मूल्य से कम है। अतः शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सच्चाई में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 3: अशासकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की मानवीयता की तुलना

समूह	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	C.R.	निष्कर्ष
छात्र	–	34.65	0.396	सार्थक अंतर नहीं
छात्राएँ	–	34.82	0.396	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या: अशासकीय महाविद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की मानवीयता के मध्यमान क्रमशः 34.65 एवं 34.82 प्राप्त हुए। C.R. = 0.396 है, जो निर्धारित सारणी-मूल्य से कम है। अतः दोनों समूहों के बीच मानवीयता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 4: अशासकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की विनम्रता की तुलना

समूह	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	C.R.	निष्कर्ष
छात्र	35.56	3.64	0.664	सार्थक अंतर नहीं
छात्राएँ	35.34	3.77	0.664	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या: अशासकीय महाविद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की विनम्रता के मध्यमान क्रमशः 35.56 एवं 35.34 प्राप्त हुए। C.R. = 0.664 है, जो 0.05 स्तर (1.96) तथा 0.01 स्तर (2.58) से कम है। अतः विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 5: शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों की विनम्रता की तुलना

तुलना	C.R.	df	0.05 स्तर	0.01 स्तर	निष्कर्ष
शासकीय बनाम अशासकीय	0.727	998	1.98	2.63	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या: स्वतंत्रता के अंश 998 पर C.R. = 0.727 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर के 1.98 तथा 0.01 स्तर के 2.63 से कम है। अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों की विनम्रता में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

7. चर्चा

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच अध्ययन किए गए मानवीय मूल्यों में अधिकांश तुलनाओं में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है। ईमानदारी के उदाहरण में दोनों समूहों के मध्यमान में थोड़ा अंतर होने के बावजूद C.R. सार्थक स्तर तक नहीं पहुंचा। इससे स्पष्ट होता है कि केवल संस्थान का प्रकार विद्यार्थियों की मूल्य-जागरूकता को निर्धारित करने वाला पर्याप्त कारक नहीं है।

छात्र एवं छात्राओं की तुलनाओं में भी समान प्रवृत्ति दिखाई देती है। सच्चाई, मानवीयता तथा विनम्रता के विभिन्न परीक्षणों में प्राप्त C.R. मान अपेक्षाकृत कम रहे। इसका अर्थ यह हो सकता है कि मूल्य-विकास अनेक सामाजिक एवं शैक्षिक अनुभवों से प्रभावित होता है और उसे केवल लिंग के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है।

इन निष्कर्षों का एक महत्वपूर्ण शैक्षिक पक्ष यह है कि महाविद्यालयों में मूल्य शिक्षा को अलग-थलग विषय के रूप में देखने के बजाय उसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और संस्थागत संस्कृति का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार, सहपाठी समूह, सामाजिक सेवा, सामुदायिक सहभागिता तथा महाविद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों में मूल्यों को व्यवहार में रूपांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अध्ययन यह भी संकेत देता है कि विद्यार्थियों में मूल्यों की उपस्थिति का मात्र होना पर्याप्त नहीं है; आवश्यक

है कि वे मूल्य वास्तविक जीवन के निर्णयों और व्यवहार में दिखाई दें। इसलिए भविष्य की मूल्य-शिक्षा गतिविधियों में अनुभवात्मक, सहभागितापूर्ण और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ी गतिविधियों को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए।

8. प्रमुख निष्कर्ष

- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की ईमानदारी में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- शासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सच्चाई में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- अशासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की मानवीयता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- अशासकीय महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की विनम्रता में भी सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- समग्र रूप से अध्ययन के परिणाम यह संकेत करते हैं कि मानवीय मूल्यों की जागरूकता में संस्थान के प्रकार के आधार पर स्पष्ट सांख्यिकीय विभाजन नहीं है।

9. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में ईमानदारी, सच्चाई, मानवीयता तथा विनम्रता जैसे मूल्यों की स्थिति को समझने के लिए संस्थागत प्रकार के साथ-साथ व्यापक सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। अध्ययन की अधिकांश परिकल्पनाओं के परीक्षण में C.R. मान सारणी-मूल्य से कम रहे और इसलिए संबंधित शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकार की गईं। यह परिणाम मूल्य शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि मूल्य-विकास को केवल किसी विशेष प्रकार के महाविद्यालय की विशेषता नहीं माना जा सकता। मूल्य निर्माण एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें परिवार, शिक्षक, संस्था, सहपाठी, सामाजिक परिवेश और विद्यार्थी के व्यक्तिगत अनुभव सभी योगदान करते हैं।

10. शैक्षिक निहितार्थ

- महाविद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम एवं सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए।
- ईमानदारी और सच्चाई के विकास के लिए वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित चर्चा एवं गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
- मानवीयता के विकास के लिए सामाजिक सेवा, सामुदायिक कार्य तथा जरूरतमंदों की सहायता से संबंधित कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- विनम्रता, सम्मान और सहयोग की भावना विकसित करने के लिए समूह-कार्य और संवादात्मक शिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को स्वयं मूल्यपरक व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।
- महाविद्यालयों में NSS, NCC तथा अन्य सामाजिक सहभागिता कार्यक्रमों को मूल्य-विकास से जोड़ना उपयोगी होगा।
- भविष्य में ग्रामीण-शहरी, विभिन्न संकायों तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों को सम्मिलित करके व्यापक अध्ययन किए जा सकते हैं।

संदर्भ

[1] गुप्त, बनवारी लाल. (2018). स्वामी विवेकानंद का मानव-निर्माण दर्शन. नई दिल्ली: रामकृष्ण मिशन।

[2] गुप्त, रमेशचंद. (2018). वैदिक साहित्य में निहित नैतिक एवं मानवीय मूल्य. दिल्ली: आर्य साहित्य मंडल।

[3] गुप्त, एस. पी. (2018). आधुनिक भारतीय शिक्षा में नैतिक मूल्य. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

[4] गौतम, ए. के. (2018). मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम और मानवीय मूल्य. इलाहाबाद: सेंट्रल लॉ एजेंसी।

[5] जैन, सुंदरलाल. (2018). सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकार. भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

[6] भारद्वाज, दिनेश. (2018). रामचरितमानस में पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्य. जयपुर: विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन।

[7] पाठक, पी. डी. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें।

[8] राय, पारसनाथ. अनुसंधान परिचय।

[9] कपिल, एच. के. अनुसंधान विधियां।

[10] सुखिया, एस. पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व।

[11] अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा. मानव मूल्यों की शिक्षा संदर्शिका।

IJSMRT
e-ISSN : 2582-8150